## षष्ठः पाठः

# चरैवेति-चरैवेति

वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति। सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमदः। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य प्रजातन्तुं मा व्यवच्छेत्सीः। सत्यान्न प्रमदितव्यम्। धर्मान्न प्रमदितव्यम्। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।।१।।

देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्। मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्यदेवो भव। अतिथिदेवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवितव्यानि। नो इतराणि। यान्यस्माकँसुचरितानि। तानि त्वयोपास्यानि नो इतराणि।।२।।

ये के चास्मच्छ्रेयाँसोब्राह्मणाः। तेषां त्वयासनेन प्रश्वसितव्यम्। श्रद्धया देयम्। अश्रद्धयाऽदेयम्। श्रिया देयम्। ह्रिया देयम् भिया देयम्। संविदा देयम्। अथ यदि ते कर्मविचिकित्सा वा वृत्तविचिकित्सा वा स्यात् ।।३।।

ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तत्र वर्तेरन्। तथा तत्र वर्तेथाः। अथाभ्याख्यातेषु। ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः। युक्ता आयुक्ताः। अलूक्षा धर्मकामाः स्युः। यथा ते तेषु वर्तेरन्। तथा तेषु वर्तेथाः। एष आदेशः। एष उपदेशः। एषा वेदोपनिषत्। एतदनुशासनम्। एवमुपासितव्यम्। एवमु चैतदुपास्यम् ।।४।।

## अभ्यास प्रश्न

### ➨ लघु उत्तरीय प्रश्न

१. आचार्यः अन्तेवासिनं किं उपदिशति?
२. स्वाध्यायात् किम् न कुर्यात्?
३. सत्यात् च धर्मात् किम् न कुर्यात्?
४. आचार्यस्य आदेशः कस्य तुल्यः भवति?
५. कस्मात् कस्मात् न प्रमदितव्यम्?
६. सत्य भाषणे किम् न कुर्यात्?
७. पिता कस्य तुल्यः भवति?

### ➨ अनुवादात्मक प्रश्न

**१. अधोलिखित अवतरणों का ससन्दर्भ हिन्दी-अनुवाद कीजिए–**

(क) वेदमनूच्याचार्योऽन्तेवासिनमनुशास्ति..... न प्रमदितव्यम्।
(ख) देवपितृकार्याभ्यां न प्रमदितव्यम्..... तानि त्वयोपास्यानि।
(ग) नो इतराणि ..... वृत्तविचिकित्सा वा स्यात्।
(घ) ये तत्र ब्राह्मणाः संमर्शिनः ..... एवमु चैतदुपास्यम्।

**२. अधोलिखित सूक्तिपरक पंक्तियों की ससन्दर्भ हिन्दी-व्याख्या कीजिए–**

(क) सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायान्मा प्रमादः।
(ख) मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव अतिथि देवो भव।

(ग) श्रद्धया देयम्, ह्रिया देयम्, भिया देयम्, संविदा देयम्।
(घ) एतदनुशासनम्।

३. **अधोलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिए–**
(क) तुम सत्य बोलो और धर्म का आचरण करो।
(ख) स्वाध्याय में प्रमाद मत करना।
(ग) सत्य भाषण में प्रमाद नहीं करना चाहिए।
(घ) श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए।
(ङ) आचार्य का आदेश वेदवाक्य के समान होता है।

## ➡ व्याकरणात्मक प्रश्न

१. **अधोलिखित क्रियापदों में धातु एवं लकार बताइए–**
आगमिष्यति, गच्छामः, भवन्ति।

२. **निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय बताइए–**
प्रदितव्यम्, गत्वा, गृहीत्वा, नीत्वा, मन्त्रयित्वा।

३. **अधोलिखित में सन्धि विच्छेद कीजिए–**
सत्यान्न, धर्मान्न, यान्यनवद्यानि, यान्यस्माकम्, त्वयोपास्यानि।

## शब्दार्थ

**वेदम्** = वेद को। **अनूच्य** = कहकर, उच्चारण करके। **अन्तेवासिनम्** = शिष्य को। **अनुशास्ति** = उपदेश देता है। **सत्यं वद** = सत्य बोलो। **धर्मं चर** = धर्म का आचरण करो। **स्वाध्यायात्** = स्वाध्याय से। **मा** = नहीं। **आचार्याय** = आचार्य के लिए। **प्रियम्** = प्यारा। **धनमाहृत्य** = धन भेंट करके। **प्रजातन्तुम्** = सन्तान की परम्परा को। **व्यवच्छेत्सीः** = नष्ट करो। **सत्यान्न** = सत्य से नहीं। **प्रमदितव्यम्** = प्रमाद करना चाहिए। **धर्मान्न** = धर्म से नहीं। **कुशलान्न** = कुशल से नहीं। **भूत्यै** = उन्नति के साधनों के विषय में। **स्वाध्यायप्रवचनाभ्याम्** = वेदों के अध्ययन और अध्यापन में। **देवपितृ कार्याभ्याम्** = देवों तथा पितरों से सम्बन्धित कर्मों में। **मातृदेवः** = माता को देव समझने वाले। **भव** = होओ, बनो। **पितृदेवः** = पिता को देव समझने वाले। **आचार्य देवः** = आचार्य में देवता की भावना रखने वाले। **अतिथि देवः** = अतिथि को देवता मानने वाले। **यान्यनवद्यानि** = जो प्रशंसनीय, श्रेष्ठ। **तानि** = वे। **सेवितव्यानि** = सेवन करने चाहिए। **इतराणि** = अन्य। **अस्मच्छ्रेयाः** = हमसे श्रेष्ठ। **श्रद्धया** = श्रद्धा की भावना से। **श्रिया** = अपनी सम्पत्ति के अनुसार। **ह्रिया** = लज्जा के अनुसार। **भिया** = भय के कारण। **संविदा** = मित्रता की भावना से। **कर्मविचिकित्सा** = किसी कर्म के विषय में सन्देह। **वृत्तविचिकित्सा** = किसी आचरण के सम्बन्ध में सन्देह। **सम्मर्शिनः** = विवेकशील। **आयुक्ताः** = स्वेच्छा से काम करने वाला। **अलूक्षा** = सरल स्वभाव के। **वर्तेथाः** = व्यवहार करना। **अथाभ्याख्यातेषु** = जो आरोपित है। **एषः** = यह। **आदेशः** = आदेश है। **वेदोपनिषत्** = वेदों का रहस्य, वेदों की शिक्षा। **एतदनुशासनम्** = यही अनुशासन है। **एवमुपासितव्यम्** = इसी प्रकार तुम्हें उपासना करनी चाहिए।

●●